राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जानें....

माया क्या है और रावण क्या है?

बाबा के मधुर महावाक्य को हम सभी रोज़ सुन करके आत्मसात करते रहते हैं। परंतु बीच-बीच में कभी-कभी ब्राह्मणों को माया सताती है और तभी बाबा कहते हैं बच्चे खबरदार रहना है। रावण बड़ा जबरदस्त है, बड़ा दुश्मन है। तो मन में एक सवाल उठा कि माया और रावण एक ही है या अलग है? क्या कहेंगे! फिर बाबा कई बार कहते हैं माया मेरी आज्ञाकारी बच्ची है, रावण को तो कभी बच्चा कहा नहीं। तो एक ही है या अलग है? अभी कन्फ्यूज़्ड हो रहे हैं... वास्तव में अगर देखा जाये तो माया और रावण दोनों अलग चीज़ हैं। एक नहीं हैं। तो माया किसको कहें और रावण किसको कहें? क्योंकि कई बार होता है रावण और हम कहते हैं माया आ गई, माना हल्का ले लिया। माया माना फीमेल कैरेक्टर के रूप में दिखाया, रावण माना मेल कैरेक्टर के रूप में दर्शाया। दोनों के ऊपर अगर हम चिन्तन करें तो दोनों अलग चीज़ हैं।

बाबा भी जब कहता है कि माया मेरी आज्ञाकारी बच्ची है, जब भी कोई ब्राह्मण ज्ञान में चलता है तो बाबा माया को कहते, देखो तो सही कि ये कच्चा है या पक्का है? बाज़ार में एक मटका लेने जाओ तो कितनी बार ठोक-ठोक कर देखते हैं कि कच्चा है कि पक्का है? ठीक इसी तरह भगवान को जिसके हाथ में अढ़ाई हज़ार साल राज्य सौंपना हो विश्व का, तो कच्चे के हाथ में थोड़े देगा! उनको तो पक्के चाहिए। इसीलिए बाबा ऐसा कहते कि देखो तो सही कि ये कच्चा है या पक्का है!

कभी-कभी ब्राह्मण शिकायत करते हैं कि भक्ति में भी इतनी परीक्षा नहीं देनी पड़ी, जितनी यहाँ देनी पड़ती है। क्यों? क्योंकि यहाँ बाबा को ऐसे बच्चे नहीं चाहिए जो थोड़ी-सी बात आये और सोडा वाटर हो जाये। बाबा को तो मजबूत बच्चे चाहिए। जो माया से, रावण से युद्ध करके विजयी हो जायें, ऐसे बच्चे चाहिए। इसीलिए प्रथम दिन से ही माया परीक्षा लेना चालू करती है, ठोकना चालू करती है ये कच्चा है या पक्का है? जैसे ही कोर्स पूरा होता है, और रोज़ मुरली क्लास में जाने लगते हैं तो सबसे पहले घर वाले ही पूछना चालू करते हैं – क्या बात है, ये रोज़-रोज़ सुबह कहाँ भाग रहे हो? घर का काम-काज है कि नहीं? परीक्षा आती है कि नहीं आती है? माताएं अनुभवी हैं कि पहले दिन से ही परीक्षा चालू होती है। लेकिन फिर भी निश्चयबुद्धि होने के कारण डट के रहे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने समझ लिया कि ये रोज़ जाने वाले हैं। बोलना बंद किया। उसके बाद जैसे ही प्याज़-लहसुन छोड़ा तो फिर परीक्षा शुरू होती है कि ये कौन-सा नया धर्म आया है? ये कहाँ लिखा हुआ है कि ये सब छोड़ दो! अब जो कच्चे होंगे वो तो छोड़ के चले जायेंगे। बाबा कहते, मुझे तो पक्के बच्चे चाहिए। जो पक्के होते हैं, अपने दृढ़ता में रहते हैं वो उन परीक्षाओं में भी सहज, सहनशील होकर के भी, मजबूत बन कर के भी पार कर जाते हैं। इसीलिए देखो रामायण के अन्दर अगर देखा जाये तो पहले फीमेल कैरेक्टर्स आती है रावण तो बाद में एंटर होता है। पहले तो शूर्पणखा, मंथरा यही सब आती हैं। रावण तो बहुत बाद में आया। इसीलिए ब्राह्मण जीवन पूरी रामायण है। जिससे हम गुज़रते हैं, वो ब्राह्मण जीवन है। जिसको हम रामायण के रूप में, महर्षि वाल्मीकि ने लिखा कि ब्राह्मण जीवन कैसा होता है...!

तो कहानी आरंभ होती है दशरथ से। और दशरथ से जब कहानी आरंभ होती है, यानी बाबा ने भी हमें सबसे पहले दशरथ बनाया, सतयुग में। संगमयुग के पुरुषार्थ से हम दशरथ बनते हैं अर्थात् स्वराज्य अधिकारी आत्मा। जिसका अपनी कर्मेन्द्रियों के ऊपर, दसों इन्द्रियों के ऊपर सम्पूर्ण अधिकार है। तो सतयुग के अन्दर हम ऐसी दशरथ आत्माएं थीं। सम्पूर्ण स्वराज्य अधिकारी- पाँच स्थूल इन्द्रियां और पाँच सूक्ष्म इन्द्रियां, ऐसी हमारी स्थिति हमने अन्त में बनाई थी। जिस कारण जो प्रालब्ध मिली, सतयुग और त्रेतायुग की, उसमें हम दशरथ होकर जीते थे। जिसका राज्य कहाँ था, अयोध्या। जहाँ कभी युद्ध नहीं हुआ। तो सतयुग और त्रेतायुग में किसी के जीवन में युद्ध नहीं था। क्योंकि दशरथ थे और जिनकी तीन साथियाँ थीं। तीन साथियाँ कौन-सी थी- सबसे पहली 'कौशल्या'। कौशल्या माना सर्व कुशलताओं से सम्पन्न। अर्थात् बाबा ने हमें 16 कला सम्पूर्ण बनाया था, तो ये हमें 16 कला, ये सारी कुशलताएँ, हमें हासिल थी। ये पहली साथी थी हमारी। दूसरी साथी थी – 'कैकेयी', अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा। तो प्राप्तियाँ भी अखूट थी हमारे जीवन में। इसीलिए कहा जाता कि जब कैकेयी को पूछा गया कि- 'माँगों तुम्हें जो कुछ चाहिए वो मिल जाएगा'। दो वरदान माँगने के लिए कहा था, तो उसने कहा मुझे किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, सबकुछ है मेरे पास। आवश्यकता पड़ने पर कहेंगे लेकिन अभी तो कुछ नहीं चाहिए। ऐसी सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्माएँ सतयुग और त्रेतायुग में थे। और तीसरी साथी थी हमारी 'सुमित्रा'। यानी सर्व के प्रति हमारा मित्रता का भाव एक 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना के साथ हम जीते थे। तो ये हमारी तीन साथियाँ थी, दशरथ आत्मा की। - क्रमशः

बाज़ार में एक मटका लेने जाओ तो कितनी बार ठोक-ठोक कर देखते हैं कि कच्चा है कि पक्का है? ठीक इसी तरह भगवान को जिसके हाथ में अढ़ाई हज़ार साल राज्य सौंपना हो विश्व का, तो कच्चे के हाथ में थोड़े देगा! उनको तो पक्के चाहिए। इसीलिए बाबा ऐसा कहते कि देखो तो सही कि ये कच्चा है या पक्का है!

दिल्ली-हरिनगर। ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा नेशनल सिक्योरिटी गार्ड्स(एनएसजी)मुख्यालय,मेहराम नगर दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में डायरेक्टर जनरल एम.ए. गणपति व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मोटिवेशनल स्पीकर एवं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन, हरिनगर सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. सारिका बहन, कैप्टन शिव सिंह एवं ब्र.कु. रितु बहन। कार्यक्रम में आईपीएस, आईजी, डीआईजी, कमाण्डेंट्स एवं रेंजर्स के करीब 300 लोग शामिल रहे। ऑल इंडिया एनएसजी हब ने कार्यक्रम का ऑनलाइन माध्यम से लाभ लिया।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। आनंदपुरी केन्द्र संस्थापक ब्र.कु. कैप्टन अहसान सिंह के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि एवं पूर्व सैनिकों के सम्मान कार्यक्रम का आयोजन बी.एल.एस. इंटरनेशनल स्कूल में किया गया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक देवेश पाण्डेय, लेफ्टिनेंट जनरल से.नि. विश्वम्भर सिंह, जिला सैन्य कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कमाण्डर रघुवीर सिंह, अखिल भारतीय भूतपूर्व सैनिक संगठन उपाध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंह, मेजर योगेन्द्र सिंह, चरखी दादरी राजयोग सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेम दीदी, ब्र.कु. सुकान्ती दीदी सहित अनेक पूर्व सैन्य अधिकारी एवं शहर के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

जींद-हरियाणा। सिविल हॉस्पिटल के डॉ. गोपाल के सीएमओ बनने पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में राजयोगिनी ब्र.कु. विजय दीदी ने उन्हें ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट कर सम्मानित किया व बधाई दी।

मोकामा-बिहार। रेलवे सुरक्षा बल प्रशिक्षण केन्द्र मोकामाघाट में विभिन्न डिविज़न से आए उप निरीक्षक, सहायक उप निरीक्षक,प्र.आ. एवं आरक्षी के लिए आयोजित 'पर्पज़ ऑफ लाइफ' विषयक कार्यक्रम में ब्र.कु. निशा बहन एवं ब्र.कु. नमन भाई ने जीवन के मूल उद्देश्यों से अवगत कराया तथा राजयोग मेडिटेशन द्वारा सच्ची शांति का अनुभव कराया।

बिजनौर-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से कुंवर सत्य वीरा डिग्री कॉलेज में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को 'नैतिक शिक्षा और सकारात्मक चिंतन से सशक्त युवा' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू। कार्यक्रम में स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. नेहा बहन, प्रिंसिपल महेंद्र कोरम, सीनियर शिक्षक सोनम गुलाटी, डॉ. सरनम, ब्र.कु. अनुज भाई, समस्त टीचर्स स्टाफ व विद्यार्थीगण मौजूद रहे।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये
Website: www.omshantimedia.org